



Success Story: CISF की पहली महिला अधिकारी ने रचा इतिहास, सिर्फ 3 दिनों में हिमालय की 5 चोटियों पर की चढ़ाई

गीता सामोता एक प्रसिद्ध पर्वतारोहि हैं, जिन्होंने अपनी इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास से पर्वतारोहण की दुनिया में अनोखा स्थान बनाया है। उनका नाम उन साहसिक लोगों में गिना जाता है, जिन्होंने कठिन और चुनौतीपूर्ण पर्वतारोही मार्गों को पार कर अपनी योग्यता साबित की है।

aaajtak.in

नई दिल्ली, 20 मई 2025, (अपडेटेड 20 मई 2025, 2:28 PM IST)

Success Story: गीता सामोता एक प्रसिद्ध पर्वतारोही हैं, जिन्होंने अपनी इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास से पर्वतारोहण की दुनिया में अनोखा स्थान बनाया है। उनका नाम उन साहसिक लोगों में गिना जाता है, जिन्होंने कठिन और चुनौतीपूर्ण पर्वतारोही मार्गों को पार कर अपनी योग्यता साबित की है। पर्यटन और साहसिक खेलों के क्षेत्र में गीता सामोता ने कई कठिन पहाड़ों की चढ़ाई की है, जो आम लोगों के लिए असंभव मानी जाती थीं। उनकी खासियत न केवल उनके शारीरिक सामर्थ्य में है, बल्कि उनकी मानसिक दृढ़ता और धैर्य में भी है। पर्वतारोहण केवल शारीरिक बल का खेल नहीं है, बल्कि यह मानसिक शक्ति, रणनीति और प्रकृति के साथ तालमेल का भी नाम है। गीता ने ये सभी गुण बखूबी निभाए हैं।

ज्यादा जानें

मौसम की परवाह किए बिना चढ़ी हिमालय

उनका सबसे प्रसिद्ध आरोहण भारत के हिमालय में रहा है, जहां उन्होंने मुश्किल रास्तों और प्रतिकूल मौसम की परवाह किए बिना अपनी यात्रा पूरी की। इसके अलावा, गीता सामोता ने युवाओं को पर्वतारोहण के प्रति प्रेरित करने के लिए कई कार्यक्रम और कार्यशालाएं भी आयोजित की हैं। उनका मानना है कि साहस और अनुशासन से हर चुनौती को पार किया जा सकता है। गीता सामोता ने यह साबित कर दिया है कि यदि मन में दृढ़ संकल्प हो, तो कोई भी लक्ष्य कठिन नहीं होता। उन्होंने पर्वतारोहण के माध्यम से लोगों को न केवल प्रकृति के करीब लाने का काम किया है, बल्कि महिला सशक्तिकरण का संदेश भी दिया है। आज गीता सामोता हर युवा के लिए प्रेरणास्रोत हैं, जो अपनी सीमाओं को पार कर सफलता प्राप्त करना चाहते हैं। उनके जीवन से हमें यह सीख मिलती है कि मुश्किल हालात में भी हार नहीं माननी चाहिए और लगातार प्रयास करते रहना चाहिए। गीता सामोता ने यूरोप, अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया की चार सबसे ऊंची चोटियों पर फतेह हासिल कर भारतीय महिला पर्वतारोही के रूप में इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया है। इन प्रतिष्ठित शिखरों को फतेह करने में उनके अटूट दृढ़ संकल्प और अद्वितीय उपलब्धि ने विश्व स्तर पर काफी नाम कमाया है।

बचपन में सुनी लड़कों की वीरता की कहानी

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (CISF) की महिला उप-निरीक्षक (I. SI) गीता सामोता ने 8,849 मीटर (29,032 फीट) की ऊंचाई पर स्थित दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट पर सफलतापूर्वक चढ़ाई की है। सोमवार (19.05.25) की सुबह, गीता दुनिया की छत (Roof of the world) पर खड़ी थी, यह एक विजयी क्षण था, जो न केवल एक व्यक्तिगत जीत का प्रतीक था, बल्कि CISF और भारतीय राष्ट्र के भीतर पैदा हुई अविश्वसनीय ताकत का भी प्रतीक था।

यह ऐतिहासिक उपलब्धि राजस्थान के सीकर जिले के चक गांव के विनम्र परिवेश में शुरू हुई एक यात्रा की परिणति है, जो बाधाओं को तोड़ने और प्रेरित करने की इच्छा से प्रेरित थी। चार बहनों के साथ एक साधारण परिवार में जन्मी गीता का पालन-पोषण चक गांव में पारंपरिक तरीके से हुआ। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा और कॉलेज की पढ़ाई स्थानीय स्तर पर ही पूरी की। उन्होंने अक्सर लड़कों की उपलब्धियों की कहानियां सुनीं, लेकिन लड़कियों की उपलब्धियों का जश्न मनाने वाली कहानियों में एक खालीपन महसूस किया। गीता को हमेशा से ही खेलों में रुचि थी और वह कॉलेज में एक होनहार हॉकी खिलाड़ी थी। हालांकि, एक दुर्भाग्यपूर्ण चोट ने उसे टीम से दूर जाने के लिए मजबूर कर दिया, एक ऐसा झटका जिसने अनजाने में उसे एक अलग तरह के क्षेत्र की ओर मोड़ दिया।

2011 में हुई CISF में शामिल

2011 में गीता केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल में शामिल हो गईं। यहीं पर उन्होंने देखा कि पर्वतारोहण एक ऐसा रास्ता था, जो लोगों के लिए आसान नहीं था, क्योंकि उस समय CISF के पास समर्पित पर्वतारोहण दल भी नहीं था। उन्होंने इसे एक अवसर के रूप में पहचाना। इस दूरदर्शिता ने उन्हें 2015 में एक महत्वपूर्ण क्षण तक पहुंचाया, जब उन्हें औली में भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP) प्रशिक्षण संस्थान में छह सप्ताह के बुनियादी पर्वतारोहण पाठ्यक्रम के लिए चुना गया। खास बात यह है कि वह अपने बैच में एकमात्र महिला प्रतिभागी थीं। बुनियादी पाठ्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के बाद उनका जुनून और कौशल बढ़ता ही गया। उन्होंने 2017 में एक उन्नत पर्वतारोहण पाठ्यक्रम पूरा किया और यह उपलब्धि हासिल करने वाली एकमात्र CISF कर्मी बन गईं।

इन कठोर ट्रेनिंग प्रोग्राम ने ने उनके भीतर के पर्वतारोही को बाहर लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 2019 में उनकी दृढ़ता ने महत्वपूर्ण फल दिया जब वह उत्तराखंड में माउंट सतोपंथ (7,075 मीटर) और नेपाल में माउंट लोबुचे (6,119 मीटर) पर चढ़ने वाली किसी भी केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (CAPF) की पहली महिला बनीं। 2021 की शुरुआत में, माउंट एवरेस्ट अभियान के लिए CAPF दल, जिसमें गीता भी शामिल थीं, दुर्भाग्य से तकनीकी कारणों से रद्द कर दिया गया था। यह क्षण, जो एक मृत अंत हो सकता था, इसके बजाय एक और भी महत्वाकांक्षी लक्ष्य के लिए उत्प्रेरक बन गया: "सात शिखर" चुनौती, जिसमें सात महाद्वीपों में से प्रत्येक पर सबसे ऊंची चोटी पर चढ़ना होता है। वैश्विक COVID-19 महामारी से अप्रभावित, गीता ने लगातार अपने सात शिखरों के सपने का पीछा किया।

2022 तक चार दुर्जेय चोटियों पर की सफलतापूर्वक चढ़ाई

2021 और 2022 की शुरुआत के बीच, उन्होंने इनमें से चार दुर्जेय चोटियों पर सफलतापूर्वक चढ़ाई की। ऑस्ट्रेलिया में माउंट कोसियसजको (2,228 मीटर), रूस में माउंट एल्ब्रस ((5,642 मीटर), तंजानिया में माउंट किलिमंजारो (5,895 मीटर) और अर्जेंटीना में माउंट एकांकगुआ (6,961 मीटर)। उन्होंने यह अविश्वसनीय उपलब्धि हासिल की। सात शिखरों में से चार पर विजय प्राप्त करना केवल छह महीने और 27 दिनों के उल्लेखनीय अंतराल में, जिससे वह ऐसा करने वाली सबसे तेज भारतीय महिला बन गईं। अपनी उपलब्धियों में इजाफा करते हुए, गीता लद्दाख के रूपशु क्षेत्र में केवल तीन दिनों में पांच चोटियों पर चढ़ने वाली पहली और सबसे तेज महिला भी बन गईं, जिनमें 6,000 मीटर से अधिक ऊंची तीन चोटियां और 5,000 मीटर से अधिक ऊंची दो चोटियां शामिल हैं। 19 मई, 2025 को, गीता ने अपने पर्वतारोहण करियर की सबसे महत्वाकांक्षी चुनौती माउंट एवरेस्ट, साहस, अटूट प्रतिबद्धता और गहन राष्ट्रीय गौरव से भरा एक मिशन को सफलतापूर्वक पूरा किया।

गीता को मिले कई पुरस्कार

अपनी असाधारण उपलब्धियों के लिए गीता को काफी सम्मानित किया गया है, जिसमें दिल्ली महिला आयोग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2023 पुरस्कार और नागरिक उड्डयन मंत्रालय द्वारा "सपनों को पंख देने का पुरस्कार 2023" शामिल है। गीता कहती हैं, "पहाड़ एक महान समतलीकरण हैं, यह भेदभाव नहीं करता है। केवल कुछ ही लोग जिनके पास वह एक्स-फैक्टर है, वे उन शक्तिशाली ऊंचाइयों को जीत सकते हैं।" CISF उनके प्रयासों का दृढ़ समर्थक रहा है, अभियानों में भाग लेने और वित्तीय सहायता प्रदान करने के अवसर प्रदान करता है, जिसमें ABVIMAS, मनाली में उनके शीतकालीन अनुकूलन प्रशिक्षण और सफल एवरेस्ट अभियान शामिल हैं।

गीता ने न केवल पहाड़ों पर विजय प्राप्त की है, बल्कि लिंग संबंधी रुढ़ियों को भी तोड़ा है, यह साबित करते हुए कि महिलाएं सबसे कठिन क्षेत्रों में भी उत्कृष्टता प्राप्त कर सकती हैं। गीता का युवा लड़कियों के लिए संदेश सरल है बड़े सपने देखो, कड़ी मेहनत करो और कभी हार मत मानो। उनकी उपलब्धियों को आगे बढ़ाते हुए, CISF ने 2026 में माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए एक पूरी CISF पर्वतारोहण टीम भेजने की भी योजना बनाई है। महानिदेशक और सीआईएसएफ के सभी रैंकों ने एल/एसआई गीता समोता को हार्दिक बधाई दी है। उनकी असाधारण यात्रा और सफल शिखर सम्मेलन भारत के युवाओं के लिए प्रेरणा की किरण के रूप में चमकता है और पूरे केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल बिरादरी के लिए बहुत गर्व का क्षण है। ■